бр
173
H

ंगरेज़ों की अकड़ फूं
निकल गई

ाशक- पं० बाबूराम दैनेरिया पो० ...पुर ... जि० ...
जेंट:- भारत बुक एजेंसी नई सड़क देहली

891.43
An 48 An

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVT. OF INDIA
No. 173
Date 10.12.78

वन्दे मातरम्

एक साहब कहते थे कल पीट पीट यूं ।
निकल गई भाई लार्ड सारी अकड़ फूं
वह भी ज़माना था कि जब दुनिया में धाक थी ।
शोहरत हमारी दुनिया में शोहरए आफ़ाक़ थी ॥
क़िस्मत उरूज पर थी और तक़दीर पाक थी ।
क्योंकि कोई सूरत भी न खतरनाक थी ॥
देखा न हम ने आज तक भी रेकी बद शगूं । निकल०
माना कि इब्तदा में हम बिलकुल कंगाल थे ।
घर में नहीं हमारे दो पैसे का माल था ॥
अच्छे बुरे का भी नहीं हम को खयाल था ।
जो जिस तरह से मिल गया वह ही हलाल था
लेकिन मैं देसी बातों का अब ज़िक्र क्या करूं । निकल०
जब से हमारे इण्डिया क़ब्ज़े में आगया ।
अदबार और इफ़लास तो एक दम चला गया
मां । बाप । सर । हज़ूर तक हम को कहा गया ।
हर इण्डियन पर इस क़दर था रोब छा गया ॥
ताक़त न थी किसी की कि चीं करे या चूं । निकल०
ओहो वह दिन भी कैसे थे ऐशो निशात के ।
दिन के सामान और थे और और रात के ॥

जो इण्डियन थे थे वोह चाहे किसी ज़ात के।
टुकड़ा हम उन को देते थे मानिंद खैरात के।
इस पर भी इन की तरफ़ से कुछ हां हुई न हूं। निकल०
लेकिन ज़माना आगया अब तो कुछ और ही।
एक दम से बदल गया ज़माने का दौर ही॥
न वह इण्डियन रहे न वह उन के तौर ही।
करते नहीं हमारे हुकुम पर यह गोर ही॥
हम हुक्म दें तो कहते हैं बकते हो मुफ़्त क्यों। निकल०
गांधी ने इन्हें सबक़ कुछ ऐसा पढ़ा दिया।
इन का दिमाग़ आसमान पर चढ़ा दिया॥
जो रोब दाब था वह बिलकुल उड़ा दिया।
चिड़यों को हाथ बाज़ से इस ने लड़ा दिया॥
तुरख़्त यह उन की देख के मैं हाथों को मलूं। निकल०
सोचा था इन का जोश यह फ़र्ज़ी उबाल है।
हम से मुक़ाबले की भला क्या मजाल है॥
उस वक़्त तक ही इनकी ज़रा टेढ़ी चाल है॥
नरमी का ज़रा जब तलक दिल में ख्याल है॥
एक दिन यह छोड़ देंगे सारी टां व हूं। निकल गई०
ऐसा बनाया हम ने एक कानून ख्वारबार।
मुंह से ज़बान छोड़ी न ज़बान में गुफ़्तार॥
इन के सरों पे रखदी इस क़िस्म की कटार।

जिस के इधर भी धार है और उस तरफ़ भी धार ॥
काट देगी फ़ौरन ज़रा की उन्हों ने चूं । निकल गई०
अफ़सोस यह तरकीब भी बेकार ही रही ।
पहले तो कम ही कहते थे फिर खूब ही कही ॥
जो कुछ कि जिस के मुंह में आया कह दिया वही
खो बैठे थोड़ी बहुत भी जो थी रही सही ॥
इस तरह से खोल दिया बे तहाशा मुंह । निकल गई ॥
देखा कि अब यह इस तरह बेबाक होगये ।
सुन सुन के इन की बातें हम भी खाक होगये ॥
अब इस तरह पर चुस्त और चालाक होगये ।
सोचा कि यह तो बहुत ही खतरनाक होगये ॥
मुंह पर सुखने लग गये अब किस तरह करूं । निकल०
हम ने इन्हें उड़ाया गोलियों की बाढ़ से ।
और भून दिया बहुत सों को नाड़ ताड़ से ॥
बस्ती व शहर करदिये बिलकुल उजाड़ से ।
खेला शिकार खूब ही टट्टी की आड़ से ॥
एक दम में कर दिया है सैंकड़ों का खूं । निकल०
फिर मारशल ला करदिया कर दी जबान बंद ।
घर बंद शहर बन्द गली और मकान बन्द ॥
सड़क बंद मारकीट बन्द और दुकान बन्द ।
और जरूरियात ज़िंदगी के सब सामान बंद ॥

इस पर भी हम ने देखा तो हालत है दिगर यूं। निकल०
फिर भी तो इन की ज़रा भी ज़बान् नहीं रुकी।
दम खम वही रहा ज़रा गरदन नहीं झुकी ॥
यह हांकते रहे वही अपनी सी ये तुकी।
ताकत हमारी आखरी भी खतम हो चुकी ॥
इस पर भी कम हुआ नहीं इन का ज़रा जनूं। निकल गई०
जब बहुत ही यह मुंह हमारे आनि लग गये।
यहां तक कि क़ौम पुलिस को बहकाने लग गये ॥
लोगों को घर पे जा जा के समझने लग गये।
हमारी मुलाज़मत गुनाह बतलाने लग गये ॥
कहने लगे कि करते इन की नौकरी हो क्यों। निकल गई०
फिर तो फ़िकर हुई कि काम सब बिगड़ चला।
फौज और पुलिस न रही हम क्या करेंगे भला ॥
यह मानते नहीं दबाया बहुत ही गला।
ओ माई लार्ड! इण्डियन बहुत बुरी बला॥
सोचा बहुत कि इन का अब इलाज क्या करूं। निकल०
आखिर यह कहना भी जुर्म देदिया करार।
ऐसा कहे जो कर लो उसे फौरन गिरफ्तार॥
जो कहने वाले थे वह पकड़ लिये पांच चार।
और भेजदिये जेलमें स्वराज्य तलबगार॥
हम इस जगह भी फ़ेल हुये और सर निगूं। निकल०

पहले तो एक दो ही का हम को हुआ फ़िकर।
हर एक की ज़ुबां से सुन लो यह अब ज़िकर
हर एक यह पुकारता फिरता है सर व सर
चाहे भीक मांग नौकरी इन की मगर न कर॥
कहते हैं कौन २ और किस २ का नाम लूं। निकल०
हर एक जगह पे कह रहे छोटे बड़े तमाम।
कि पुलिस और फ़ौज की है नौकरी हराम।
हम को हराम होगया सब ऐश और आराम।
किस २ का मुंह बंद करूं किस २ को दूं लगाम।
दिन रात उठते बैठते बस इस फ़िकर में हूं। निकल०
सोचा फिर और इन को ज़रा आज़माइये।
अब दूसरे तरीक से आंखे दिखाइये॥
इन के दिलों पर जेल का ही डर बिठाइये।
सख्ती से और जब्र से इन को दबाइये॥
यूं नहीं यह मानते तो मान लेंगे यूं। निकल गई०
फिर जो मिला उसे ही गिरफ़तार कर लिया।
इन को पकड़ पकड़ के जेल खाने भर लिया॥
जिस को कि चाहा उस को ही बस आगे धर लिया
कि देंगे क़ैद ऐसा तुम ने नाम गर लिया॥
इस से वह आग भड़की कि बुझा नहीं सकूं। निकल०
दावे जो हम ने बांधे थे वह सब अबस हुये॥

हिन्दुस्तानी ज़रा भी न इस से मस हुये ॥

हम थक गये पकड़ते थे लेकिन न बस हुये ।

पकड़ा जो हम ने एक तो तैय्यार दस हुये ।

इस आखरी हथियार की भी पोल गई यूं । निकल गई ॰

फिर बन्द करना चाहा इस नाजायज़ शोर को

ममनू क़रार देदिया वालिन्टियर कोर को ।

ख़तरा था इन से सलतनत की बाग डोर को ।

ये भी असर रखते थे हकूमत के ज़ोर को ।

घर का यह अपने इन्तज़ाम करने लगे क्यूं । निकल गई ।

पहले तो कहीं कहीं थे अब फिरती टोलियां ।

और बोलते क़ानून के ख़िलाफ़ बोलियां ॥

कहते हैं वह बुला कर आओ मारो गोलियां ।

इन गोलियों को समझते हम फूलों की झोलियां

सारा ही मुल्क उठ खड़ा किस २ को पकड़ लूं । निकल गई ॰

दो चार दिन में सब हमारे जेल भर गये ।

हम मारते थे उन को मगर आप मर गये

क़ैदी हमारे देख कर इन को बिगड़ गये ।

इन से भी ज्यादा वह हमारे सर पे चढ़ गये

हर एक यही कहता है मैं काम क्यूं करूं । निकल गई ॰

इन की नज़र में जेल तो बिलकुल ही खेल है ।

कहते हैं कि स्वराज्य का रस्ता ही जेल है ।

अजब हमारे साथ हुई धका पेल ॥

इस इम्तहान में भी हुआ हम ही फ़ेल है।

सारी हमारी निकल गई हां और हूं। निकल गई॰

अब सोचते हैं कौन से चक्कर में पड़ गये।

किये कराये काम ही सारे बिगड़ गये ॥

खुद ने ही बिल बनाया और हम बिल में पड़ गये।

जिन के लिये बनाये वह उलटा अकड़ गये ॥

बोलो बताओ कोई तो अब किस तरह करूं। निकल॰

अब हम हर एक तौर से लाचार होगया।

दुनिया के सामने भी शरमसार हो गया ॥

बेकार सब वासिलि व हथियार होगया।

सच पूछू तो खफ़कान का बीमार हो गया ॥

मुंह में है छपकली इसे खाऊं या छोड़ दूं। निकल॰

गायन – गाढ़े से प्यार

चलन्त पंजाबी

गाढ़े से मोड़े प्यार भाईयो नहीं तजना। टेक

गाढ़े बिन नहीं कोई आजादी।

जब तक हर घर ना हो खादी ॥

और चर्खे तार। भाइयो नहीं तजना। गाढ़े से॰

गाढा कहे सो कर दिखलादे।

मैनचैस्टर को तल यावे ॥

उस के सह परिवार। भाइयो नहीं तजना। गाढ़े०

गाढ़ा गर्मी में रहे ठण्डा।

और सर्दी के मारे डंडा।

भेजे कोस हजार। भाइयो नहीं तजना। गाढ़े०

देश भक्त जो खद्दर धारी।

धन्य धन्य उन की बलिहारी।

और सब हैं मक्कार। भाइयो नहीं तजना। गाढ़े के मोह०

जो गाढ़े नू है बिसरावे।

अपनी मां दा दूध लजावे।

है जीना धिक्कार। भाइयो नहीं तजना। गाढ़े से०

रहा साल भर गाढ़ा जारी।

यूरप के रोवें नर नारी॥

कोस कोस सरकार। भाइयो नहीं तजना। गाढ़े से०

गाढ़ा करके विजय दिखलावे।

स्वराज्य को संग में लावे।

रहे स्वतंत्र धार। भाइयों नहीं तजना। गाढ़े से मोह०

गायन – महात्मा गांधी ने

तर्ज़ रोहतक व हरियाणा

महात्मा गांधी ने हिलादिया संसार। टेक।

यह भोली भाली शकल वाला।
दुनिया में बड़ी अक़ल वाला।
अन्याय में है यह दखल वाला।
जिस से कांपे है सरकार। महात्मा०

यह दुबला पतला एक नर है।
जिस को अति प्यारा खद्दर है।
न जग में उसको कुछ डर है।
रहता है बिन हथियार। महात्मा०

एक चर्खा उस की मशीन गन है
कुछ खद्दर धारी पलटन है॥
कोई मोटा कोई सुर्ख तन है।
ले सत्याग्रही तलवार। महात्मा०

नहीं ताज साज यह वाला है।
नहीं नखरे नाज़ वह वाला है॥
एक खाली लंगोटी वाला है।
जिस पे चढ़ते हथियार। महात्मा०

यह कहता मुल्क न गारत हो।
हां बेशक नेक तिजारत हो।
और कहे स्वतन्त्र भारत हो।
बस चहाता निज अधिकार। महात्मा०

गज़ल

मिटा देंगे हकूमत को हम ऐसा करके छोड़ेंगे
हम अपने भारत पर खुद अपना कब्ज़ा करके छोड़ेंगे
तू ऐ बादे सबा जाकर यह पंजम जार्ज से कहदे
कि हम इंगलैंड वालों को लिफ़ाफ़ा करके छोड़ेंगे
गज़ब की बेड़ियां डाली हैं जो ज़ालिम ने पैरों में
इसी झंकार से हम हशर बरपा करके छोड़ेंगे
न छोड़ें जीते जी दुशमन का पीछा हम बद काले हैं
अगर छोड़ेंगे तो दुशमन को मुर्दा करके छोड़ेंगे
अज़ीज़ों अब मुरव्विज होने दो गांधी के चर्खे को
इसी चर्खे से हम दुश्मन को चर्खी करके छोड़ेंगे

भजन

हमारे मुल्क भारत की यह आखीरी लड़ाई है।
न होगी जंग फिर ऐसी महतमा ने बताई है।
अगर तुम स्वर्ग चाहते हो या जन्नत चाहिये तुमको
लिखा दो नाम जल्दी से शुरु होगई लड़ाई है।
करो तुम जंग दुशमन से अहिंसा धारकर दिल में
न ऐसा वक्त आयेगा हवा ऐसी ये आई है॥
करो तुम हिम्मते मरदां मदद देगा खुदा तुम को
बनाया आसमां जिस ने ज़मीं जिस ने बनाई है॥

तुम्हें यह जेल की घुड़की दिखाकर के डरायेंगे।
मगर तुम एक मत सुनना करो इन पर चढ़ाई है।
तुम्हारे घर में ईमां की सचाई देख लेने को।
ज़माने भर ने आकर के नज़र तुम पर जमाई है।
न करना ख्याल ये दिल में कि आज़ादी नहीं होगी
ये थोड़े दिन की सख्ती है जो ज़ालिम ने चलाई है
वह पछतायेगा पीछे से जो ना मानेगा गांधी को।
तअस्सुब को हटा दीजे वतन की यह लड़ाई है

न पूछो

न पूछो अहले युरुप को हम क्या करके छोड़ेंगे।
किया है हम को नंगा हम भी नंगा करके छोड़ेंगे।
हमेशा दाव देकर हम से बाज़ी जीत लेते हैं।
दिवाली आने दो हम भी दिवाला करके छोड़ेंगे।
कुतब खाना बरेली पर किया कब्ज़ा तो क्या डर है
इरादा है कि लंदन पर भी कब्ज़ा करके छोड़ेंगे।
ये यां का गल्ला भर भर ले जायें यहीं पर बा।
लेकिन यह भूके हिन्दी भी एक एक का बदला ले
छोड़ेंगे।

ग़ज़ल

चलती—कह रहे हैं खिलाफ़ती के क़ैदी।

वारदी अपनी क़ौमी बनाकर।

लेंगे स्वराज्य सुसराल जाकर

अब तो चमका मुकद्दर का तारा।

रंजो ग़म दूर होगा हमारा।

नारा वन्दे मातरम लगा कर। लेंगे॰

डर नहीं जेल खाने से हम को।

काम मतलब बरारी से हमको।

जाते हैं जेल खुशियां मनाकर। लेंगे स्वराज्य॰

जेल खाना है ससुराल का घर

घर से ससुराल के माल को भर

सरपे सुल्तान के डंका बजाकर। लेंगे।

हम तो जाते हैं अब तुम सम्भालो

काले भाई की सुनो रे काली।

गोराचमड़ा रहेंगे मिटाकर। लेंगे॰

जेल खाना है ससुराल सब की।

उस में जाकर के पीसेंगे चक्की।

नाम जिन्दों में अब हम लिखाकर। लेंगे॰

मरद मैदां है गांधी जी का

और किचलू व जफ़र अली का

हुक्का दिल और जां से बजाकर। लेंगे॰
जेल खाने का कुछ डर नहीं है।
फांसी पाने का कुछ गम नहीं है
हम तो दुशमन का बेड़ा डबोकर। लेंगे॰
या इलाही हमें जो सतावे।
चैन दुनिया में हरगिज न पावे
तेरी रहमत को हमराह लाकर। लेंगे स्वराज्य

राष्ट्रीय गायन

मेरा रंग दे तिरंगी चोला - मेरा रंग दे तिरंगी चोला। टेक
इसी रंग में शिवा जी ने मां का बंधन खोला। मेरा रंगदे॰
इसी रंग में यतीन्द्र नाथ ने तज्या शरीर अनमोला। मेरा॰
इसी रंग में लाला लाजपत स्वर्ग दा फाटक खोला। मेरा॰
इसी रंग में राणा प्रताप सिंह वन २ जंगला डोला। मेरा॰
इसी रंग में असेम्बली के भारा पटेल ने खोला। मेरा॰
इसी रंग में तैय्यब जी ने आखिर जेल टटोला। मेरा॰
इसी रंग में गांधी जी ने नून पे धावा बोला। मेरा॰
इसी रंग में वी॰ के भगत सिंह भूक दा रस्ता खोला। मेरा॰
इसी रंग में मोती लाल जी सर्वस अपना वोला। मेरा॰
इसी रंग में सरोजनी नायडू जीवन सर्वस घोला। मेरा॰
इसी रंग में वीर जवाहर, कंधे डाला झोला। मेरा॰

इसी रंग में सत्यवती ने बहनों का हृदय खोला। मेरा०
इसी रंग में इन्द्र जी ने जीवन अपना तोला। मेरा०
इसी रंग में श्रद्धानंद ने गोली को सीना खोला। मेरा०

गज़ल

ज़ालिमों के ज़ुल्म को बिलकुल मिटाना चाहिये।
अब तो कुछ वीरो तुम्हें करके दिखाना चाहिये।
जब तुम्हारे देश में है जंगे आज़ादी ठनी।
क्या तुम्हें इस वक़्त में भी मुंह छिपाना चाहिये।
आप के सब से बड़े नेता चले गये जेल में।
कुछ तो ग़ैरत आप को भी शर्म आना चाहिये।
मर्द कहलाते हो तुम कुछ तो करो मरदानगी।
वर्ना हाथों में तुम्हें चूड़ी चढ़ाना चाहिये।
देश की और क़ौम की हालत को जो सुनता नहीं।
उनके माथे पर स्याह टीका लगाना चाहिये।
गाय और सूअर की चर्बी खून से कपड़े बनें।
ऐसे नापाकों के कपड़ों को जलाना चाहिये।
अब विदेशी को न बरतें कपड़ा हो या कोई चीज़।
ऐसे सब सामान पर लाहौल पढ़ना चाहिये।
हुक्म है गांधी का यह सब वस्त्र खद्दर के बनें।
शुद्ध खद्दर की लंगोटी तक बनानी चाहिये।

ग़ज़ल

पीढते हो पैर नाहक़ अब ठिकाना देख लो।
हो गया आज़ाद भारत यह ज़माना देख लो।
अब क़दम जमते नहीं खूंख्वारियों के हिंद में।
होती आई है फ़ज़िर आशियाना देख लो।
अपने ही ज़ुल्मों से तुमने हम को दीं आज़ादियां
गौर से आमाल नामा आगियाना देख लो।
हम खड़े हैं सामने हटना है पीछेको हराम।
हाथ में बन्दूक़ ले सीना निशाना देख लो।
इन्तहां आज़ाद लेने का तुम्हें लेना है गर।
फ़ैर तोपों के करो और बम गिराना देख लो।
देख लो इंसाफ़ लारड डायर का पंजाब पर।
लार्ड रीडिंग। हुकम नादिर वहशियाना देख लो।
ऐसा हिन्दुस्तान के तुमको रहेंगे याद बस
आयेगा ऐसा हराम माल खाना देख लो

[illegible]

व्योपारियों को विशेश लाभ॥

क्रांत कारी पुस्तकें ३६ प्रकार की ६) में भेजी जाती हैं। व्योपारियों को २७) हज़ार खरचा है हर एक व्योपारी को मंगाकर लाभ उठाना चाहिए॥
मिलने का पता सेल एजंट भारत बुक एजंसी नई सड़क देहली